15598

जय श्रीसीताराम जी की
जय श्रीकिशोरी जी की

श्रीमती सहचरी सीय-सौंदर्य-लता के गाए हुए थोड़े से पद

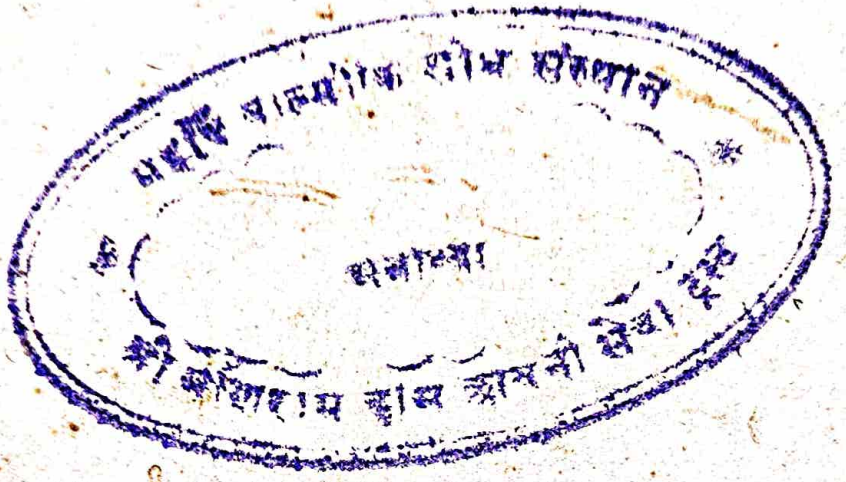

संग्रहकर्त्ता

श्री मैथिलीशरण सिंह

प्रकाशक

पुस्तक भंडार, पटना–४

[निछावर सतत भजन

महर्षि वाल्मीकि शोध संस्थान
अयोध्या
श्रीमती चन्द्रमणि देवी आपकी सेवा में

श्रीमती चन्द्रमणि देवी

(श्रीमती सहचरी सौख्य-सौन्दर्य-लता-पंचा)

संसार में, रथयात्रा, संवत् १९५६ को आईं

साकेत प्रस्थान, पौषशुक्ल ८, सोमवार; संवत् २०२७ (४-१-१९७१ ई०)

संसार में ७१ वर्ष

प्रार्थना १

जय जय सुरनायक जन-सुखदायक प्रनतपाल भगवंता।
गो द्विज-हितकारी जय असुरारी सिंधु-सुता-प्रिय-कंता॥
पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मरम न जानइ कोई।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करहु अनुग्रह सोई॥
जय जय अविनासी सब घट-वासी ब्यापक परमानंदा।
अविगत गोतीतं चरित पुनीतं माया रहित मुकुंदा॥
जेहि लागि बिरागी अति अनुरागी बिगत-मोह मुनि बृंदा।
निसि बासर ध्यावहिं गुनगन गावहिं जयति सच्चिदानंदा॥
जेहि सृष्टि उपाई त्रिविध बनाई संग सहाय न दूजा।
सो करउ अघारी चिंत हमारी जानिअ भगति न पूजा॥
जो भव-भय-भंजन मुनिमन-रंजन-गंजन बिपति बरूथा।
मन बच क्रम बानी छाड़ि सयानी सरन सकल सुर जूथा॥
सारद स्रुति सेषा रिषय असेषा जाकहँ कोउ नहिं जाना।
जेहि दीन पियारे बेद पुकारे द्रवउ सो श्री भगवाना॥
भव बारिधि-मंदर सब बिधि सुंदर गुनमंदिर सुखपुंजा।
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पदकंजा॥

दो०—जानि सभय सुर-भूमि सुनि, बचन समेत सनेह।
गगन-गिरा गंभीर भइ, हरनि सोक-सदेह॥

प्रार्थना २

छंद—भए प्रकट कृपाला दीनदयाला कौसल्या-हितकारी।
हरषित महतारी मुनि-मन-हारी अदभुत रूप बिचारी॥

लोचन-अभिरामा तनु-घनस्यामा निज आयुध भुज चारी।
भूषन बनमाला नयनबिसाला सोभासिंधु खरारी॥

कह दुइ करजोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करउँ अनंता।
माया-गुन-ज्ञानातीत अमाना बेद पुरान भनंता॥

करुणा-सुख-सागर सब-गुन-आगर जेहि गावहिं स्रुतिसंता।
सो मम हित लागी जन-अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता॥

ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम-रोम प्रति बेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीरमति थिर न रहै॥

उपजा जब ज्ञाना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै॥

माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजिअ सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा॥

सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।
यह चरित जे गावहिं हरिपद-पावहिं ते न परहिं भवकूपा॥

दोहा—बिप्र-धेनु-सुर-संत हित, लीन्ह मनुज अवतार।
निज-इच्छा-निर्मित-तनु, माया-गुन गो-पार॥

प्रार्थना ३

भई प्रकट कुमारी भूमि बिदारी, जन हितकारी भयहारी।
अतुलित छबि भारी मुनिमनहारी जनकदुलारी सुकुमारी।
सुंदर सिंहासन तेहि पर आसन कोटि हुतासन द्युतिकारी।
शिर छत्र बिराजै सखिगन भ्राजै निज-निज काजै करधारी।
सुर सिद्ध सुजाना हनहिं निशाना चढ़े विमाना समुदाई।
बरषहिं बहु फूला मंगल मूला अनुकूला सिय-गुण गाई।
देखहिं सब ठाढ़े लोचन गाढ़े सुख बाढ़े उर अधिकाई।
अस्तुति मुनि करहीं आनंद भरहीं पायँनि परहीं हरषाई।
ऋषि नारद आए नाम सुनाए सुनि सुख पाए नृप ज्ञानी।
सीता अस नामा पूरनकामा सब सुखधामा गुनखानी।
सियसन मुनिराई विनय सुनाई समय सुहाई मृदुबानी।
लालनि तनु लीजै चरित सुकीजै यह सुख दीजै नृपरानी।
सुनि मुनिवर बानी सिय मुसुकानी लीला ठानी सुखदाई।
मोवत जनु जागी रोवन लागी नृप बड़भागी उर लाई।
दंपति अनुरागेउ प्रेम सुपागेउ यह सुख लागेउ मनलाई।
अस्तुति सिय केरी 'प्रेमलतेरी' वर्णकुचेरी सरनाई॥

दो०—निज इच्छा मख भूमिते, प्रगटभई सिय आय।
चरित किए पावन परम, वरधन मोदनिकाय॥

प्रार्थना ४

जय जय श्री अवध दीव्य जय जय श्री सरयू ।।
अद्भुद चिद्रूप धाम निर्मल जिमि राम नाम,
प्रकृति पार परम दीव्य ब्रह्म भक्ति घर जू ।
धार कुन्द इन्दु रंग मुक्तावलि वर तरंग,
शोभित उर पुरी नारि दीव्य हारलरजू ।।जय० ।।
चारि चारु द्वार चारि मुक्ति मनहुँ कर पसारि,
लेत गोद भीतर भव बाहिर नहिं डर जू ।
दामिनि निन्द रति नीर सीतल एकरस गंभीर,
दरस परस मज्जन किये दुरित दोष हरजू ।।जय०।।
घर घर प्रति कल्प वृक्ष धवल धाम गुच्छ स्वच्छ,
ऋद्धि सिद्धि बाहिर पुर झारति रजु खर जू ।
अचल सरयू तिहूँ काल क्रीड़ारस लली लाल,
रघुबर मन भव प्रवाह सुधा सलिल भरजू ।।जय०।।
निर्मित गज मुक्त अवनि पूरित पुर पुरट चवनि,
विचरत सर हंस गवनि मंगल घर घर जू ।
युगल कूल विरति ज्ञान शान्ति तोष मणि सोपान,
भक्ति धार मुनि बिहार दोउ किनार पर जू ।।जय०।।
ध्यावत मुनिजन अनंत गावत बुध श्रुति भवंत,
पावत भगवंत अवध भावत मन मर जू ।
वेद विवुध नन्दिनि मुनि चित चकोर चन्दिनि जनु,
त्रिविधि ताप भंगिनि हिम कमल करम करजू ।।जय०।।
काल जाल गंजनि शुभ अशुभ कर्म खंडनि मन,
चित अनन्द कन्दनि जिन्ह अवध चरण धर जू ।
जिय चेत अवध चल जू नहिं ज्ञान कर्म कर जू,
बसि राम चरण सरयू तीर राम राम रर जू ।।जय०।।

पद १

रामचंद्र दुलहा सुहावन लागे अति मनभावन लागे हे।
माइ हे ना जानी कौशिल्या माइके कोखे गुण की रामचंद्र रूप गुण हे।।
माथे मणि मौरिया सुहावन लागे अति मनभावन लागे हे।
माइ हे ना जानी मलिनियाँ के बनवे गुण की रामचंद्र माथे गुण हे।।
चंदन दुलहा के सुहावन लागे अति मनभावन लागे हे।
माइ हे ना जानी पंडित जी के हाथे गुण की रामचंद्र भाल गुण हे।।
कंठा दुलहा के सुहावन लागे अति मनभावन लागे हे।
माइ हे ना जानी सोनरवा के गढ़े गुण की रामचंद्र कंठ गुण हे।।
अंग में के जोड़वा सुहावन लागे अति मनभावन लागे हे।
माइ हे ना जानी दरजिया के बनवे गुण की रामचंद्र अंग गुण हे।।
चरण महावर सुहावन लागे अति मनभावन लागे हे।
माइहे ना जानी हजमा के लगावे गुण की रामचंद्र चरणे गुण हे।।

पद २

जादू भरी राम तुम्हरी नजरिया।
जेहि चितवत तेहि बस करि राखत, सुंदर श्याम राम धनुधरिया।।
जुलफन जुत मुखचंद्र प्रकाशित, नाशामणि लटकन मन हरिया।
युगलप्रिया मिथिलापुर बासिन, फँसी जाल बिच मानो मछरिया।।

पद ३

जाग्यो भाग तिहारो। राघोजी बनाजी।
जा दिन ते थे मुनि संग आए, सुधरो सकल जु थारो।।
ऐसी दुलहिन तुम कहाँ पाई हो, ए तो जिय में विचारो।
सूरजवंश उदै होइ आयो, भाल कपाट उघारो।।
गिनते रहियो श्वास सिया के, मन जिन कीज्यो न्यारो।
सिया सखी सियजू को ब्याहत धोयो कुलरो कारो।।

पद ४

सब काम काज छोड़िके छबि बनरे की देखो।
सब तौर मोबारक इह समा सोहनी सजनी।
इसमें ही अपने जन्म की सुख शादियाँ लेखो।।
बड़भागिनी मिथिलापुरी अनुरागिनी सोही।
जिसमें लली लालन की सुछवि छावनी पेखो।।
कुरबान करो आपको सजि के शृंगार प्यार।
निरखो नई अदा न लगे नैन निमेखो।।
सुरमे सजाए चश्म में दृग दीजिए अपना।
जीवन युगल अनन्य लहो लाह विशेषो।।

पद ५

दुलह की दमक देखिए दिल लाए के आली।
करकंज मधुर मंज में मेंहदी सजी लाली।।
सखियाँ छकी माती पिए रस सुधि न सम्हाली।
मुसक्यान माह मुख की मुझे लगती है रसाली।।
सेहरे से सेहरे सँकरो जाहिर है जमाली।
किस तरह जबाँ से कहौं छवि श्याम उजाली।।
अकसीर निगह नेह भरी जुल्फ जंजाली।
जी जुग्म का फँसिके तहाँ निकसै न निकाली।।

पद ६

नख सिख छबि अवलोकु अली री।
दूलह राम जानकी दुलहिनि, घन दामिनि निज एक थली री।।
जावक पग नूपुर मँजीर युत, सज्जन मन किधौं मधुप वली री।
जामा रुचिर पीत जरकस कटि, पट परिधान ज्योति भली री।।

जरकसि कलित अरुण चूनरि सों, पीत बसन कृत गाँठि भली री।
चंद्रहार मणिमाल जवाकृत, पंचदाम गर चंपकली री॥
बैजंती बनमाल पदिक मणि, कंठागर छवि कंबु छली री।
बलय चूरि संघटित विभूषण, अंगुलीय करकंज कली री॥
कंकण कड़ा मुद्रिका भुजबल, वर अंगद भुजदंड बली री।
श्रवण फूल ताटंक पादिका युग, प्रकाश मिलि केश हली री॥
कुंडल मकर कपोल केश बिच, तिलक रेख जस काम गली री।
नासा नथ लटकन बेंदी युत, अर्धचंद्र धृत क्रीट लली री॥
कंचन रचित समूह मणिनमय, मुकुत प्रभा सब जग उजली री।
पूरणचंद्र प्रकाश बदन लखि, बैजनाथ मन कुमुद कली री॥

पद ७

सखि यह अवध छयल दिलदार बना बनि आयो री॥
मोतिन मौर सीस पर सोहैं, जुवतिन को मन छिन में मोहैं;
को है यहि जग बीच जो नाहि लुभायो री॥
मिथिला की बाँकी सुकुमारी, जेती रूप गुमानन वारी,
निज गुमान छवि पिय की निरखि गँवायो री॥
मोहिनि पढ़ि टोना हँसि डारत, तापर तिरछी सैन निहारत,
डगर-डगर यहि पुर में कहर मचायो री॥

पद ८

एहन स्वरूप काहाँ पौलौं अलबेला यो अवधेशी छैला,
हेरिते हरैए हमर प्राण॥
काजर कएल आँखि जुलुम करैए यो अवधेशी छैला,
मोरैए मदन मन मान॥

जुलुफक फाँस में फँसैलौं पुरवासी यो अवधेशी छैला,
गाँसी मारे मंद मुसुकान।।
स्वामिनी सिया के संगे मिथिले में बसियौ यो अवधेशी छैला,
मोद उर येहे अरमान।।

पद ९

कैसा बना अलबेला लखो री सखी, कैसा बना अलबेला।।
शिरमणि मौर कलंगी झुकेला, छोरन छवि छहरेला।
जुलुफ सिटेला भृकुटि मटकेला, चितवनि चखनि चुभेला।।
केसर खौर भाल झलकेला, अलक कलित झुलकेला।
नाशामणि मंजुल हुलसेला, लखितहिं मन ललचेला।।
अधर मधुर मुसुकनि मधुरेला, मिथिला सिथिला करेला।
सिया जू के नाते पाहुन भेला, मोद सु मगन नचेला।।

पद १०

सिय दुलहे से नयन जब जूटी।।
लोक लाज कुल की मरजादा ताग तड़ातड़ टूटी।
काल कर्म भ्रम प्रबल कालिमा छवि छाकतहीं छूटी।।
निज निज रुचि अनुरूप महा सुख लूटैं चतुर बधूटी।
मोद अली के प्राण जीवनधन श्याम सजीवन बूटी।।

पद ११

मैया सुनयना के पाहुन रे कहीं नजरो न लागे।
प्रेमिन जीवन धन रे कहीं नजरो न लागे।।
कौन सुकृत हम परसल पायल कौशिल्या के चारु खेलौना रे।
बाम नयन भुज फरकन लागे पायउँ श्याम सलोना रे।।
छेमकरी नित मड़रत आँगन पायउ छबीले नृप छोना रे।
मोद न भूलि लड़ैयो नयना, चितवनि में जादू टोना रे।।

पद १२

मोरा लालन कनेक मुसका दे नयनमाँ माने नहीं।
सुंदर लाल भाल पर चानन, काजर कयल नयन छवि आनन,
मौरिया के लर हटवा दे।।
दाड़िम दसन हँसन बिच टोना, त्रिभुवन मोहन श्याम सलोना,
मुसुकैत नैना उठा दे।।
हीरक हार मउर लर मोती, चपकन चारु बियहुती धोती,
चरणक महावर देखा दे।।
'स्नेहलता' लखि रूप मनोहर, राखि लेल हिय बीच धरोहर,
माँगब न हम किछु जादे।।

पद १३

कैसी जोड़ी बनी लाल-प्यारी प्रिया श्याम श्यामा की।।
क्या मुखचंद चारु चमकि रही चम चम चम,
वसन तन नील पीत दमकि रही दम दम दम,
भुषण अंग-अंग में झम झमकि रही झम झम झम,
रतनारी दृगनि कजरारी ।।१।। प्रिया०।।
लखैं निमिपुर नर-नारि नजर गरि गरि गरि,
भूरि भागिनी अनेक भाव भरि भरि भरि,
दूरि कानि मान सान मान करि करि करि,
भइ कतल हँसनि असिं मारी।।२।। प्रिया०।।
परस्पर ह्वै रहे बलिहारि युगल लखि लखि लखि,
चारु माधुरी अपार चखनि चखि चखि चखि,
'मोद' मग्न महा झाँकि आँखि रखि रखि रखि,
मन-बुधि चित अहमिति हारी।।३।। प्रिया०।।

पद (झूला) १४

लखु सखि सरजू पुलिन सियपियवा,
झूलि रहे संग सियवा के।
कदम्ब डार महँ लगी हिरोलना,
नवरंग मणि कमनीयवा के।
मध्य प्रिया प्रीतम छवि निदरैं,
अगणित मदन रतियवा के।
श्रीचंद्रकला लाड़िलि-दिसि ठाढ़ी,
चारुशिला दिसि पियवा के।
लंक, बंक करि मारत मचकी,
हलरत भूषण हियवा के।
परसि परस्पर सुख सरसावैं,
अमि वर्षावैं अँखियवा के।
पारा पारिन झूलि झुलावैं,
आस पुरावैं सब तियवा के।
एकटक पीवत 'मोद' माधुरी,
जरनि जुरावत जियवा के।

पद १५

कोन जतन प्रभुपद पायब हे साजनि, निरखब नयन अघाए।
जगत-जंजाल में काल गमौलों, अब कछु कहलो न जाए।
सकल कुटुंब मीत स्वारथ के, कोऊ न हीत लखाए।
रहि रहि के हिय हहरैं हूक भर, घर अँगना न सोहाए।
पापी प्राण पिंड नहिं छोड़ए, पल-पल नयन लगाए।
भूषण वसन असन विहसन सब, लागत विषम बलाय।
करुणानिधि कहबैछी प्रभु जी, मोद न मन पतिआए।
जौं आब शीघ्र दरस नहिं भेटत, मरब जहर विष खाए।

पद १६

रघुनंदन आवहिं विलोकु सखियो,
नजरवाली नजर सँभार रखियो,
जादूवाली जदुआ सँभार रखियो,
टोनावाली टोनमाँ सँभार रखियो ।।
माथे मणि मौरवा विलोकु सखियो,
न० । जा० । टो० ।।
केशर की खौरवा वि० । न० । जा० । टो० ।।
नयननि कजरवा वि० । न० । जा० । टो० ।।
जुलमी नजरवा वि० । न० । जा० । टो० ।।
कुंडल हलनमा वि० । न० । जा० । टो० ।।
मंजु नासा मनवा वि० । न० । जा० । टो० ।।
स्याम-गौर जोड़वा वि० । न० । जा० । टो० ।।
'मोद' चितचोरवा वि० । न० । जा० । टो० ।।

पद १७

मोहिलेलक सजनी मोरा मनमाँ, पहुनमाँ राघो ।
जुलुमी जुलुफिया कारी, माथे मणि मौरिया न्यारी ।
लाल लाल भाल पर चननमाँ ।। पहुनमाँ राघो ।
अँखिया में काजर काली, ठोरवा पर पानक लाली ।
मुसुकैत श्यामल बदनमाँ ।। पहुनमाँ राघो ।।
दुपटा चपकन लगनौती, पहिरे बियहुती धोती ।
पहुँची पर आम के कंगनमाँ ।। पहुनमाँ राघो ।।
धनि धनि किशोरी मोरी, देखल सनेहिया जोरी ।
हिय मोरा कोहबर के भवनमाँ ।। पहुनमाँ राघो ।।

पद १८

कौने नगर के सिंदुरिया सिंदुर बेचे आयल हे।
आगेमाइ कौने नगर के कुमारी धीया सिंदुर बेसाहल हे।।
अवध नगर के सिंदुरिया सिंदुर बेचे आयल हे।
मिथिला नगर के कुमारी धीया सिंदुर बेसाहल हे।।
कौन रंग रसिया जे बरवा से सिंदुर चढ़ावल हे।
कौन धीया वारी सुकुमारी से सिंदुर सँवारल हे।।
श्याम रंग रसिया जे बरवा से सिंदुर चढ़ावल हे।
सिया धीया वारी सुकुमारी से सिंदुर सँवारल हे।।
जय जय होत चहुँ ओर सुमन बरसावल हे।
'कदमलता' पद गावल सुनि सुख पावल हे।।

पद १९

प्रिय पाहुन रुचि सँ जेमि लिय।
छमि भूल चूक गुनि अबुधि तिय।
अहाँक जोग किछु बनलो ने ब्यंजन,
से बिचारि सकुचाइए जिय।
भावक भुखल स्वभाव अहाँक सुनि,
पुनि पुनि अति हुलसाइए हिय।
जानब तखन कहब आहाँ जखनहिं,
अमुक वस्तु कने और दिय।
किंचित वचन बजैत लजाइ छी,
परम कृपालु कहाइ छी किय।
जनि लजाउ निज कुलाचार पर,
संत सुखद अति अवध धिय।
'मोद' मुदित मन विनती सुनावथि,
सिरकिन लखि लखि सीय पिय।।

रास-पद १

श्रीरघुनंदन रसिक सिरोमणि रास रचायो री।
नख सिख भूषण वसन सँवारि नवेलिनि धायो री।।

चित्रित चांदनि चारु सुहावन। कोटिन सरद मयंक लजावन। फस सजी मलमली बिछावन। मानिनि के मन मैन जगावन, लय लय यंत्रणि सब सहचारिणि समसरसायो री।। मध्यविराजैं प्रीतमप्यारी। अगणित रतिमनमथगतिहारी। दंपति देत ताल पर तारी। रसभरि कहैं वाह बलिहारी। लागीं नृत्य करन ललना-गन छननन-छायो री।। नयननि ते नयननि जब जूटैं। कंचुकिबंद तरातर टूटैं। रसिया रहसि-रहसि रस लूटैं। मोतिन हरिआ चरिआ फूटैं। आनंद उमगि उमगि अंग अंग अनंग समायोरी।। मंद मुसुकि दइ इंदु इसारा। ह्वैगै अमित रसिक सरदारा। द्वैप्यारी बिच बिच पियप्यारा। नृत्य करैं करि कला अपारा। सर्यू सिथिल नाद सुनि 'मोद' महामुद पायोरी।।

पद २

सजनी आजु अशोक विपिनिमे रास रचाए हो रामा।
साजे नटनि-साज रंगरसिआ रंग मचाए हो रामा।।
यंत्रणि मिलाए अलिअन समसरसाए रस उमड़ाये हो रामा।
तदिअन दिरना-तुमतन दिरना गति दरसाए हो रामा।।
युगल माधुरी गाय गाय उमगाए, तनहिं भुलाए हो रामा।
नेही नाहजू नेह नहाए सबहिं रमाए हो रामा।
वीना को बजाए चंद्र चंद्रहिं थम्हाए चलन-भुलाए हो रामा।।
अद्भुत वाद्यकला लखि प्रीतम कंठ लगाए हो रामा।
अलिन विलोकि फूलि फूल वरषाए, भई मन भाए हो रामा।
'मोद' मोदहूँ के हीय मोद छाए हो रामा।।

पद ३

सियपिय लूटैं सरद बहारैं, सरयु किनारे हो रामा। आपस में दोउ तनमन वारैं, गरभुज डारे हो रामा।। वीणा इंदुकला झंकारैं। ललनागण गति पै पग धारैं। पैजनिध्वनि छुम्म छननन छननन छम्म छम्मकारैं हो रामा।। नृत्यैं कोटि कलान नवेली। सर्वकला कुशला अलवेली। गावैं सप्तस्वरन त्रयग्राम मूर्छना धारे हो रामा।। प्रीतम उर उमंग अति बाढ़े। द्वैप्यारी बिच बिच भय ठाढ़े। सरस्यो 'मोद' महा मंजु रस साम से भयउ सकारे हो रामा।।

पद ४

नै कहाइऐ केहुना, कोना कहू पहुना, पल कलप बुझाइए अहाँ दुहुँक बिना। सदा लखितैं रही रुख रखितैं रही, चित चखनि चहैऐ आब येहे चहना।। लखि सुखमा अपारी, अहाँ प्यारी पर वारी। ओहो मुग्ध रहथि अहाँ लखितहिना।। बीरा रुचिर बनाबी, अति प्रेमसौं पबावी, मुख पोछि सुख पावी, से अकथ कहना।। दोउदृग मारा-मारी, देखी पट ओट टारी, जेहि जोहे बिनु जाति न दृगनि दहना। सीता सीतल करैया, सुनुगुनु सियसैंयाँ, हिय निवसु सदैया मानू 'मोद' कहना।।

पद ४

रमि रहे रमताम्बर रमिताम्बरा। पगि पगि परमानंद प्रेमापरा।। बहु दंपति ह्वै कल केलि करैं, अंग अंग अनंगनि रंग भरैं, यह भेद न और को जानि पड़ै, युग मल्ल जुरे जनु जोश भरा।। रमि०।। सबहि रमणी यह जानत हैं, सबसे बढ़के मोहि मानत हैं, अधरामृत को सब छानत हैं। उन्मत्त भई न टरैं न टरा।।

पद ५

प्रीतम रंक सरिस भरि अंक रतन रस लूटैं री।
क्या टिकि रही अटूट टकाटकि कबहु न टूटैं री।। कसि भुजपास परस्पर सीपी, मत्त भए अधरासब पीपी। दोउन दमक दसो दिसि दीपी, मती सहेलिनि केलि अमीपी, चंचल चारु लंक कल अलक कपोलनि छूटैंरी।। अलिअन लय मैरेयन प्याला, प्याये मादक भरी निराला, अरुझ्यो दोउ महा रसजाला, सरुझन अगम भयो तिहुँ-काला, रसिकन संपति दम्पति जुट्यो बहुरि नहिं जूटैं री।। कविकोकिल रमताम्बर गायो, रमुक्रीड़ा श्रुतिटेरि सुनायो, यह रस रसिक संत अपनायो, पलपल मोद परानंद पायो, नाम रटैं रस एक सो रसिक लहैं रस घूटैं री।।

पद ६

कंचन बिपिन कूल कमला के, नृत्यत गावत दोउन तननन। करकंकणियाँ, कटिकिंकिणियाँ पग पयजनियाँ, बाजत झननन।। रमकि घुरनि गुड़कनि छबि लुड़कनि, उरनि छुवनि छमकनि छुम्म छननन। झूमि झकनि झोकनि भुज झिझकनि, अंगनि भूषण रव रुम्म रननन।। बैठनि उठनि ठुमुकि पिठ ठोकनि ठगि ठगि ठमकनि ठुम्म ठुम्म ठननन।। भरिभरि गोदनि पगनि प्रमोदनि 'मोद' सुमोदनि गुम्म तन मननन।।

पद १

हमारी सिया सुंदरता की सीमा ।।
अंग-अंग प्रति कोटि रमा रति वारौं निधरक हीमा ।।
मुख छवि निरखि चंद नभ में गए भ्रमत लाज दुख जीमा ।
पिय के जीवनि मूरि सजीवनि छन बिछुड़त दुख भीमा ।।
वारत राई लोन छने छने वारि उतारत पीमा ।
श्री रसमोद सुअंग माधुरी पान करत न अधीमा ।।

पद २

रघुकुल कमल विभाकर सुखसागर हे, निज जनमानस वास ।
जय जय दासरथे ।।
नील नलिन रुचि सुंदर गुण मंदिर हे, पीत वसन मृदुहास ।
जय जय दासरथे ।।
श्रीजनक सुता हितपूजन बड़ कूजन हे, दसमुख वंश हुताश ।
जय जय दासरथे ।।
बचसि हरे रस सालिनि बस पालिनि हे, निर्धुत नत भव पाश ।
जय जय दासरथे ।।

पद ३

देखु सखी अवधेश सुवन मुख ससि की ओर ।
निरखत ही छवि बदन की भए नैन चकोर ।।
श्याम ताम रस अंग लसत हैं शोभा के ऐन ।
चितवत ही चितचोर लेत अनियारे नैन ।।
श्रवण, मकर, कुंडल द्युति गंडन पर रही छाय ।
मनहु मदन के मकर अमृत सर युगल नहाए ।।
नासा मोती अधर पर झूलत मन ललचाए ।
दसन दमक मन हरन हँसनि लखि मदन जगाए ।।
कंबु कंठ उर महल से मौंतियन की माला ।
सूक्ष्म कटि कछनी कछैं छाके रस ख्याल ।।
अंस धरे भुज सीय की ससि वदन निहार ।
पान पबावत लाड़ले निज सर्वस वारि ।।
यह छवि मेरे उर बसो निशिदिन रघुलाल ।
अब न कबहुँ पिय बीसरो लखि रसके माल ।।

हरियाणा साहित्य अकादमी शोध संस्थान

पद ४

दसरथ राज दुलारे हो पिय सुनिए बैन।
बिनु देखे ये माधुरी छिन एको न चैन।।
हमसो बोलत क्यों नहीं बैठे गहके मौन।
भए अनबोले लाड़ले सो कारण कौन।।
रूप मोहनी जाल में तिय मृगन फँसाए।
नेह डोरि सों बाँधि के क्यों छोड़त अपनाए।।
जो कछु हीय में पीय तो किन लीजिए छानि।
मधुर वचन कहलाय उर राखो गहि पानि।।
प्रेम प्रीति की बल्लरी उर बढ़ी विशाल।
सींचन को सुधि लीजिए रघुवंशीलाल।।
सैल अनूप दिखाइए पिय राजकुमार।
हो तुम रसिकनरेश जू रस के आगार।।
रसभरी बीरी पाय के हँसि कंठ लगाय।
रसमाला उर पहिरिए रस लहिये अघाय।।

पद ५

तेरी चितवन मोहे राजकुमार।।
अनियारे कजरारे नैना चलत समर सरमार।।
खंजन, मीन, कमल मद मोचन लोचन लोल निहार।।
युवतिन गण तन लता विपिन बिच खेलत रूप शिकार।।
रसिक शिरोमणि राजकुँअर तुम मन की जाननि हार।।
रसमाला चितवन उर साली लीजिए बेग उबार।।

पद ६

प्रीतम तोरे नैना हो, मेरो बरबस मन हर लीना।। प्रीतम०।।
श्रवण सलाह उदार दार लगि प्रति छन लच्छ नवीना।
शोभा सार मार मारक झख कंज, खंज, मृग मीना।। प्रीतम०।।
रैन ऐन उर चैन लखै बिनु बावरि पावरि कीना।
कोविद परमानंद ध्याइए अद्भुद कुत दुख दीना।। प्रीतम०।।

पद ७

श्याम सुंदर मनमोहन प्यारे आइ गले मोरा लागू ना।
कब की बिछुड़ी प्यासी अँखिया झाँकी अमृत प्यावो ना।।

जियरा तड़पे हियरा कड़के अधर सुधा रस पागू ना।
नवल अली विरहिन अति आतुर त्यागो जनि रस पागू ना।।

पद ८

साँवरे सलोने जू से नैना मोरा लागि गये।।
नयनन में नयन सौं जुलुफ घुँघरारे कारे
अधर सौं अधर पीवत रस जागि गये।।
करज सौं करज हिया सौं हिया गए गसि
लोक परलोक हूँ को सुधि सब भागि गये।।
नवल अली सुघन दामिनी परस्पर
अरध उरध रस बस रस पागि गये।।

पद ९

अवध छयल छवि दृगन बसीरी।।
रामचंद्र मुख चंद्र मनोहर, फीको लगी अलि सरद ससीरी।।
राजत रतन जड़ित सिंहासन, क्रीट मकुट पर कलँगी डसीरी।।
मुक्तामाल विराजत उर पर, पीताम्बर कटि फेंट कसीरी।।
बायें अंग जनकजा राजत, सीस चंद्रिका अधिक लसीरी।।
श्रीरामचरण वारत मणि भूषण, देखि छवी सखि मंद हँसीरी।।

पद १०

बसो मेरे नयनन में दोउ चंद।।
गौर बरण मिथिलेश नंदिनी, श्याम वरण नृप नंद।।
दोउ लखि रहे लुभाए परस्पर, निरखत आनंद कंद।।
कृपा निवास प्रेम रस बंधन, क्यों छूटै दृढ़ फंद।।

पद ११

कब होइहैं मन मेरो अवध मधुमखियाँ।।
पिय प्यारी के रहस अनूपम, लखि लखि हिय हुलसैयाँ।।
कुंज-कुंज तट युगल माधुरी, लखि द्रुमलता लुभयाँ।।
निरखि निरखि के मदन रंग छवि, दोऊ की लैहौं बलैयाँ।।
रसमाते मदमाते दोउन के, नैन सैन अलसैयाँ।।
यह रसमोद पाई निशिवासर, जग सुख स्वाद नसैंयाँ।।

आरती १

आरति दम्पति की कीजै, उरंतर नख-सिख रख लीजै।
महावर चारु चरण सौहैं,
ललित अंगुलियन मन मोहैं,
कड़ा पायल झमझमको हैं,
साड़ि सु सजीलो, धोति पट पीलो, चादर चटकीलो,
निरखि अँखियन सनेह भीजै ।।
लसै कंचुकि जामा जड़ की।
सुभग मणिमाल पंचलड़ की ।।
कुण्डल उत इत कानन तड़की ।।
अलक झलकोहैं, तकनि तिरछोहैं, परस्पर जोहैं,
माधुरी उमगि उमगि पीजै ।।
चंद्रिका सियसिर ज्यों सत चंद।
क्रीट जगमगित धरे रघुनंद ।।
अंस भुजधारे मुसुकत मंद ।।
सदा यहि रंग, रंगैं अंग अंग, हो प्रेम अभंग
यही बर मोद अलिहिं दीजै।

आरती २

सुंदर बदन बिलोकि के नयनन फल लीजै।
श्रीजानकीवल्लभ लाल की सखि आरती कीजै ।।
कुंडल ललित कपोलना छवि अलक बिराजै।
कंठ, कंठ सुहावना गजमुक्ता राजै ।।
पाग बनी जड़तार की दुपटा जड़ तारी।
पटुका है पँचरंग की मणि जड़ित किनारी ।।
सियाजी के सोभे लाली चुंदरी छवि ज्योति सबिराजै।
रसिक अली के स्वामिनी भूषण छवि छाजै ।।

श्री मणिराम दास छावनी सेवा ट्रस्ट अयोध्या

महर्षि महेश योग विज्ञान
अयोध्या

नित्य पाठ :

१. श्री हनुमान चालीसा—मूल आवृत्ति

२. श्री रामचरित मानस का पाठ दाय लगाकर
शक्ति अनुसार।

३. अपने गुरु मंत्र का जाप—छह माला।

४. नाम ध्वनि

जय सीताराम सीताराम सीताराम जय सीताराम
जय सीताराम सीताराम सीताराम जय सीताराम
जय सीताराम सीताराम सीताराम जय सीताराम
जय सीताराम सीताराम सीताराम जय सीताराम
जय सीताराम सीताराम सीताराम जय सीताराम
जय सीताराम सीताराम सीताराम जय सीताराम
जय सीताराम सीताराम सीताराम जय सीताराम
जय सीताराम सीताराम सीताराम जय सीताराम
जय सीताराम सीताराम सीताराम जय सीताराम

५. अहर्निश ध्यान में मग्न।

नोट—सांसारिक किसी शुद्ध कर्त्तव्य में अवहेलना नहीं।

मुद्रक—श्री हिमालय प्रेस, पटना-४